16-प्रश्न काव्य में निराला के काव्यों में मानवीय चेतना

निराला के काव्यों में मानवीय चेतना

निराला आधुनिक हिन्दी कविता के विद्रोही कवि हैं / स्वभावतः निराला क्रांतिकारी हैं। छायावादी चतुष्टयी कवियों में निराला अपने अक्खड़पन विद्रोही प्रकृति के कारण विशिष्ट हैं। छायावाद से पहले और उसके समानांतर, स्वाधीनता आंदोलन से संबद्ध जो 'इतिवृत्तात्मक' कविताएँ लिखी जा रही थी, उसके नरम और गरम दो राजनीतिक पक्ष थे। नरम पक्ष के प्रतिनिधि थे मैथिलीशरण गुप्त और गरम पक्ष के प्रतिनिधि थे गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही'/'त्रिशूल'। छायावाद ने गरम पक्ष से अपना नाता जोड़ा, विशेषकर निराला ने। छायावादी कविता में आरंभ से ही भाषा, भाव, शिल्प, इन सबके सम्मिलित स्तर पर एक अन्य धारा विकसित हो रही थी। यह धारा यथार्थवाद की थी। इसके विकास का एक मंजिल सन् 1920-1930 है दूसरी 30-40 के दशक में। आधुनिक काल के तीसरे चरण को छायावादी कविता को दार्शनिक आयाम देकर उसे छंदों के परम्परागत बंधनों से मुक्त कराने वाले कविवर सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' अपने उपनाम के अनुरूप वास्तव में निराले व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी थे। एक श्रेष्ठ कवि और साहित्यकार के रूप में तो वे स्मरणीय हैं ही साथ में औघड़दानी, मस्तमौला स्वभाव, फक्कड़ एवं निराले व्यक्तित्व के कारण भी इन्हें याद किया जाता है। उनकी क्रांतिकारी चेतना इन्हें कबीर के विद्रोही व्यक्तित्व का स्मरण दिलाती है। निराला जी के काव्य को जब हम देखते हैं तो यह दिखाई पड़ता है कि भक्तिकाल के कवियों में कबीर ने इसी प्रकार का काव्य-सृजन किया है। आध्यात्मिकता को रूढ़ियों से मुक्त करने का स्तुत्य प्रयास उन्होंने किया था। आधुनिक काल में उस प्रकार का काव्य-सृजन करने का श्रेय निराला को मिलता है। उनकी कविता वैविध्य से भरी हुई दिखाई देती है। निराला के बाद इस परंपरा को नागार्जुन की कविताओं में उसकी छाप देखी जा सकती है। कुमुद शर्मा ने अपनी 'हिन्दी के निर्माता' में कहा -"निराला का समग्र जीवन अन्तर्विरोधों, संघर्षों, द्वन्द्वों, तनावों और जटिलताओं से भरा हुआ था। इस स्थितियों में वे कई बार हटे, कई बार टूटे, पर झुके कभी नहीं। प्रारंभ में महिषादल की नौकरी छोड़कर कोलकाता से प्रकाशित होनेवाले पत्र 'समन्वय' से जुड़े। फिर हास्य-व्यंग्य प्रधान पत्र 'मतवाला' से सम्बन्ध हुए। इस पत्र को गम्भीर साहित्यिक जामा पहनाने का कार्य इन्होंने ही किया। इसके बाद वे 'रंगीला', 'मौजी', 'सरोज' आदि पत्रों में भी कार्यरत रहे। लेकिन उनका स्वतंत्र और स्वाभिमानी मन इनमें बहुत रमा नहीं। काशी, लखनऊ और उसके बाद इलाहाबाद रहकर उन्होंने स्वतंत्र लेखन में ही अपनी पूरी शक्ति लगा दी।"1

प्रकृतितया निराला जी का स्वभाव क्रांतिकारी रहा है। यह भाव सर्वप्रथम छंद के क्षेत्र में हुई। उन्होंने मुक्तछंद का प्रयोग का सफलतापूर्वक उसका अपनी रचनाओं में निर्वाह भी किया। मुक्तछंद में प्रस्तुत की गई निराला की

Scanned with Cam

रचनाओं में लय या नाद सौंदर्य के साथ अपनी गति है, अपनी स्वाभाविकता है। छायावादी कविता पर वैयक्तिकता का भी आरोप लगाया जाता है। लेकिन निराला की कविताओं को पढ़ने के बाद यह स्पष्ट होता है कि निराला की वैयक्तिक या आत्मनिष्ठ कविताएँ भी सामाजिकता से भरी हुई दिखाई देती है। सामाजिक चेतना का प्रभावी रूप इनकी कविताओं में दिखाई देता है। पिछड़े वर्गों के प्रति सहानुभूति का भाव निराला में दिखाई देता है। 'बादल राग', 'तोड़ती पत्थर', 'विधवा', भिक्षुक, सरोज स्मृति' आदि कविताएं इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है। प्रतिकूल परिस्थितियों में जीनेवालों को प्रोत्साहित करने का कार्य कवि निराला ने अपनी कविताओं के आधार पर किया है। उनका स्वयं का जीवन ही दुःखों से भरा हुआ था। संघर्ष उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता रही है। संघर्ष के आधार पर ही इन्होंने अपना जीवन बिताने के कारण वे दुःखी, कष्ट सहने वाले लोगों के प्रति एक विशेष सहानुभूति के आधार पर देखते हैं। इस सहानुभूति के कारण उनकी कविता कहीं भी कमजोर नहीं हुई है। 'सरोज स्मृति' में तो वे लिखते हैं:—

" मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल
दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही!
हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म, रहे नत सदा माथ
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल
हो भ्रष्ट शीत के-से शतदल!
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर सकता मैं तेरा तर्पण।"2

राम की शक्ति-पूजा के राम, जो वाल्मीकि के शब्दों में समुद्र जैसे गम्भीर और हिमालय जैसे धैर्यवान थे, आज आसुरी शक्ति से पराजित और साधना की पराकाष्ठा पर विफलता-बोध से विषण्ण हो उठे हैं —

"धिक् जीवन जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।"3

"सरोज स्मृति का जो दुःख था, वह यहाँ भी आ गया है, अलबत्ता नैतिक पीड़ा के रूप में - ज्यादा बड़ा और सघन होकर। " निराला के सृजन की पूरी वेदना है। वही उनके जीवन-संघर्ष के केन्द्र में भी है। उनकी रचनाएँ गहरे अवसाद में जन्म लेती हैं। अंधेरा उनके जीवन को आगे डसता है। जाहिर है, निराला की लड़ाई भाँति-भाँति के अँधेरों से थी।"4

Scanned with Cam

'कौन तम के पार ? कह' कविता में तम के पार उन्हें तम ही दिखाई पड़ा है - प्रकाश नहीं। भौतिक जगत में प्राप्त होने वाले पीड़न, अपमान तथा तिरस्कार को मायामय समझकर वे उसके प्रति विरक्त नहीं हो सके हैं। परिस्थितियों की कड़ी मार ने उन्हें सिर से पैर तक हिलाकर रख दिया है - "जब कड़ी मारें पड़ीं दिल हिल गया।" और कभी-कभी तो अपने संघर्ष, विरोध तथा विषमताओं से भरे जीवन की असंख्य असफलताओं पर भयानक रूप रूप से विक्षुब्ध तक हो उठे हैं।

'राम की शक्ति पूजा' कविता पराजय, निराशा तथा पीड़ा से आक्रांत तथा हतोत्साह केवल राम की ही शक्ति याचना का स्वरूप सामने नहीं रखती - वह जीवन संघर्षों से त्रस्त, निरंतर प्रहार पर प्रहार सहने वाले, विरोधों का सामना करते करते ऊब उठने वाले कवि की भी शक्ति याचना की प्रतीक है - अन्तर केवल इतना है कि राम दैवी शक्ति की अभ्यर्थना करते हैं, जबकि शक्ति के उपासक होते हुए भी निराला इस जनता तथा समाज के बीच से ही शक्ति की किरणें बटोरने का उपक्रम करते हैं - जिसके बीच उन्होंने जीवन के क्षण जिए थे। "जीवन संघर्षों की आँच में तप कर ही उनका व्यक्तित्व निखरा था और यही कारण है कि उनका काव्य प्रारंभ से ही जन सामान्य के प्रति उनकी असीम संवेदना, करुणा तथा सहानुभूति का सूचक रहा है। मृत्यु-प्राय कंकाल शेष, दैन्य-दुर्बल मानव की ओर उपेक्षाभरी दृष्टि डालकर उसी स्थान पर बन्दरों को पुआ खिलानेवाले मनुष्य की धार्मिकता पर अपनी इसी संवेदना के बल पर उनकी लेखनी गहरा व्यंग्य कर सकी है और इसी बल पर उच्च वर्ग में जन्म लेते हुए भी वे वर्णाश्रम धर्म की रूढ़िवादिता का पर्दाफाश करते हुए एक ओर 'देवी' और 'चतुरी चमार' जैसे अमर चरित्रों का निर्माण कर सके हैं।"[5]

निराला आजीवन साधारणजन की यातना से जुड़े रहे। आजीवन समझौता विहीन रहे, आजीवन जड़ और रूढ़ मूल्यों के विरोधी रहे। अपने जीवन और रचनाकाल के परवर्ती दौर में एक खास किस्म की मध्यकालीन वैष्णव भक्तों की-सी प्रपत्ति भावना हमें उनमें दिखाई पड़ती है, उनकी वाणी में नैराश्य, विफलता तथा पराजय का बोध हमें होता है, किन्तु अपनी इसी मानसिक स्थिति में भी साधारणजन की यातना के प्रति वे बराबर जागरूक हैं। उनकी मानवीय संवेदना यहाँ भी अपने पूरे उत्कर्ष में है लेकिन इतने दुःखों के बाद भी निराला का विश्वास कभी भी कम नहीं हुआ है। 'तुलसीदास' का जीवन चिंतन भी उनकी विश्वास देने के लिए महत्वपूर्ण लगता है। इस संदर्भ में वे लिखते हैं — "करना होगा यह तिमिर पार —
देखना सत्य का मिहिर-द्वार —
बहना जीवन के प्रखर ज्वार में निश्चय —

Scanned with Cam

लड़ना विरोध से द्वन्द्व-समर,
रह सत्य-मार्ग पर स्थिर निर्भर —
जाना, भिन्न भी देह, निज घर निःसंशय।"6

आधुनिक-काल के साहित्यकारों में निराला जैसा परदुःखकातर व्यक्ति दूसरा नहीं हुआ। अपने काव्य में भी इसी से इन्होंने मनुष्य के गंभीर दुःख को पहचाना है। 'दान' शीर्षक रचना में इन्होंने मनुष्य के प्रति मनुष्य की उस निर्मम उपेक्षा की चर्चा की है जो धर्म के कारण जाने या अनजाने होती ही रहती है। 'विधवा' सामाजिक अत्याचार की व्यथा है। इसमें भारत की विधवा नारी का करुण चित्र अंकित किया गया है। 'तोड़ती पत्थर' आर्थिक विषमता एवं पूँजीवाद के प्रति विद्रोह का चित्रण है। 'भिक्षुक' शीर्षक कविता एक राष्ट्रीय समस्या के रूप में हमारे सामने आती है —

"— वह आता —
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को — भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता —
दो टूक कलेजे के करता पछताता
पथ पर आता"7

निराला ने व्यक्ति, समाज, साहित्य, कला, धर्म, राजनीति सभी पर व्यंग्य किया है। इनके व्यंग्य का एक आधार सामान्य धरातल है। इसके अंतर्गत 'नए पत्ते' की 'खजोहरा' शीर्षक रचना को ले सकते हैं। 'अनामिका' की 'दान' शीर्षक रचना में धर्म का मर्म न पहचानने वाले उपासकों पर व्यंग्य किया है। इनकी रचनाएँ सामंतवाद, पूँजीवाद और वर्तमान शासन पर करारा व्यंग्य करती हैं। इनके व्यंग्य काव्य में 'कुकुरमुत्ता' सबसे सशक्त रचना है। इसमें नवाब के बाग में उगा कुकुरमुत्ता पास में खिले गुलाब को बुरी तरह फटकारता है। स्पष्ट है कि कुकुरमुत्ता प्रतीक है, गुलाब पूँजीपति का —

"अबे सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पाई खुशबु, रंगो आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट!
कितनों को तूने बनाया है गुलाम,
माली कर रक्खा, सहाया जाड़ा-घाम"8

Scanned with Cam